हस्तरेखा संकेत

[illegible]
M.A.B.T.

"श्री"

हस्त रेखा अध्ययन

प्रभो शम्भो दीनं निहित शरणम्
त्वच्चरणयो ~~[illegible]~~ र्भवारण्यादि
-स्माद विषम विषयासि विषवृत्तात
समुद्धृत्य श्रद्धा विधुरमपि त्वद्दादर
कर दयां दृष्टया पश्य निज
तनयमात्मी कुरु:शिव ||



DIARY

1969

1969

	JANUARY	FEBRUARY	MARCH
Sun	... 5 12 19 26	2 9 16 23	30 2 9 16 23
Mon	... 6 13 20 27	3 10 17 24	31 3 10 17 24
Tues	... 7 14 21 28	... 4 11 18 25	... 4 11 18 25
Wed	1 8 15 22 29	... 5 12 19 26	— 5 12 19 26
Thur	2 9 16 23 30	... 6 13 20 27	... 6 13 20 27
Fri	3 10 17 24 31	7 14 21 28	... 7 14 21 28
Sat	4 11 18 25 ...	1 8 15 22 ...	1 8 15 22 29

	APRIL	MAY	JUNE
Sun	... 6 13 20 27	4 11 18 25	1 8 15 22 29
Mon	... 7 14 21 28	... 5 12 19 26	2 9 16 23 30
Tues	1 8 15 22 29	... 6 13 20 27	3 10 17 24 ...
Wed	2 9 16 23 30	7 14 21 28	4 11 18 25 ...
Thur	3 10 17 24 ...	1 8 15 22 29	5 12 19 26 ...
Fri	4 11 18 25 ...	2 9 16 23 30	6 13 20 27 ...
Sat	5 12 19 26 ...	3 10 17 24 31	7 14 21 28 ...

	JULY	AUGUST	SEPTEMBER
Sun	... 6 13 20 27	31 3 10 17 24	... 7 14 21 28
Mon	... 7 14 21 28	... 4 11 18 25	1 8 15 22 29
Tues	1 8 15 22 29	... 5 12 19 26	2 9 16 23 30
Wed	2 9 16 23 30	... 6 13 20 27	3 10 17 24 ...
Thur	3 10 17 24 31	... 7 14 21 28	4 11 18 25 ...
Fri	4 11 18 25 ...	1 8 15 22 29	5 12 19 26 ...
Sat	5 12 19 26 ...	2 9 16 23 30	6 13 20 27 ...

	OCTOBER	NOVEMBER	DECEMBER
Sun	... 5 12 19 26	30 2 9 16 23	7 14 21 28
Mon	... 6 13 20 27	... 3 10 17 24	1 8 15 22 29
Tues	... 7 14 21 28	... 4 11 18 25	2 9 16 23 30
Wed	1 8 15 22 29	... 5 12 19 26	3 10 17 24 31
Thur	2 9 16 23 30	... 6 13 20 27	4 11 18 25
Fri	3 10 17 24 31	... 7 14 21 28	5 12 19 26
Sat	4 11 18 25 ...	1 8 15 22 29	6 13 20 27 ...

PERSONAL MEMORANDA

Name Rattan Lal Jain,

Address L. 23 Sri Niwaspuri, New Delhi-24

Telephone { Residence x
Office 386926 (i) 386952 (ii)

Telegraphic Address

Camera No.

Motor Car No.

Motor Licence Renewal Due

Life Insurance Policy No.

Premium Due

General

LIST OF HOLIDAYS 1969.

Lohri	13th	January
Basant Panchmi	22nd	January
Republic-day	26th	January
Shivratri	15th	February
Id-ul-Zuha	28th	February
Holi	3rd	March
Dulhendi	4th	March
Ram Naumi	27th	March
Muharram	29th	March
Baisakhi	13th	April
Mahavir Jayanti	1st	May
Budh Purnima	2nd	May
Id-ul-Milad	29th	May
Bank Holiday	30th	June
Independence Day	15th	August
Raksha Bandhan	27th	August
Janam Ashtami	4th	September
Gandhi Jayanti	2nd	October
Dusehra	20th	October
Deepawali	9th	Nov.
Guru Nank Birthday	23rd	Nov.
Id-ul-Fiter	11st	Dec.
X-Mas Day	25th	Dec.
Bank Holiday	31th	Dec.

Compare with the Govt. List of holidays

JAN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	...

THU

(1)

मस्तिष्क रेखा

बायां हाथ ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का द्योतक तथा दाहिना हाथ

FRI

स्वयं अपने परिश्रम से प्राप्त शक्तियों का द्योतक है।

उद्गम-स्थान :-

१. जीवन रेखा के अन्दर की ओर से,

SAT

२. जीवन रेखा से मिली हुई।

३. जीवन रेखा के बाहिर की ओर से

SUN

★

फलादेश नं० १ का :—

MON अत्यधिक भावुक, चैतन्य,
★ कायर, स्वभाव पर शासन
नहीं।
यदि यह रेखा आगे चलकर सीधी

TUE हथेली को पार कर जाती है
तो *उपर्युक्त लक्षण सुधर जायेंगे,
यदि कलाई की ओर झुकेगी तो
नहीं।

WED
फलादेश नं० २ का :— भावुकता,
आत्म-विश्वास की कमी।
यदि सीधी होगी तो ६६ [illegible]

JAN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	...

THU 2
यदि बहुत अधिक झुकी
हुई हो तो वह व्यक्ति एकांत प्रिय
होगा। या वैराग्य ले लेगा!
या आत्मघात कर लेगा!

FRI 3
नं० ३ का फलादेश :—
(क) जब ज़्यादा चौड़ाई न हो तो भारी
निर्णय शक्ति तथा मानसिक शक्ति
(ख) यदि साथ साथ जाये और हथेली

SAT 4
के आर पार जाये तो दूसरों
पर बहुत प्रभाव और सार्वजनिक
कार्यों में विशेष सफलता।
[illegible] की ओर
जाये तो स्वयं निर्वाचित नेता और

SUN
5

तथा organiser of public movement

MON

जब अंगूठा बहुत चौड़ा है तो, बकनाकी से बश जाने की कोशिश करेगा,
बहुत अधिक क्रोधी।

सर्वोत्तम यदि म.र. बृहस्पति के

TUE
7

ऊपर से निकले

म. रे. पर द्वीप नहीं होने चाहिये

यदि म.र, ज.र से बहुत दूर हो और
उस पर द्वीप हों तो पागल हो जायेंगे

WED
8

यदि द्वीप म.र. पर बृ. के ऊपर
के नीचे हो तो बचपन में पढ़ने
की इच्छा नहीं।

JAN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	...

THU
9

यदि शनी के नीचे तो
सिर दर्द, दिमागी जलन, सूजन
यदि सूर्य के नीचे तो (Short Sight,
दृष्टि छोटी

FRI
10

यदि बुद्ध क्षेत्र के नीचे हो तो
वृद्धावस्था में दिमागी कमजोरी

प्रथम अंगुली = २१ वर्ष
दूसरी " = ४२ " तक
तीसरी " = ६३ " तक

SAT
11

चौथी " = ६३ से ऊपर

SUN 12 यदि म.र. ऊपर की ओर या गुरु की ओर झुके तो धन प्राप्ति की लालसा उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

MON 13 म.र. स्वाभाविक मार्ग छोड़ के और देखा जाय मानो हृदय रे. से मिलती है तो किसी एक इच्छा की पूर्ति के लिए दृढ़ निश्चय ~~को। ... ओर ... तो धन की~~

TUE 14 इच्छा पर (सांसारिक), लम्बाई तक पर तो, दिमागी इच्छा।

म.र पर या छूने वाले X क्रास, दिमागी चोर

WED 15 प्रथम उंगली के नीचे हो तो, क्रूरता, लड़ाई आदि के कारण ...

JAN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
—	—	—	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	...

दूसरी उंगली :- जानवरों के प्रहारों से या दुष्ट प्रवृत्तियों के कारण

THU 16 तीसरी उंगली = गिरने से या सदमा

चौथी उंगली :- विज्ञान आदि के तजुर्बों के कारण।

FRI 17 चतुर्भुज रेखा को छुये या ऊपर हो तो रक्षा करता है।

दूसरी मानसिक रे. पूरी हो, या बचि हथेली से शुरु हो, धन और सारी उंगलियों को अपने विचार देने की शक्ति।

SAT 18

SUN
19 यदि एक ही म.रे सीधी कलाई के आर पार जाती

MON
20 हो वह व्यक्ति एकाग्रचित होता है। यह लक्षण बहुत कम पाया जाता है और ऐसा व्यक्ति अकेला काम करना पसंद करता है। दिमागी

TUE
21 शक्ति तो बहुत होती है परन्तु यह आत्मविश्वासी लक्षण नहीं।

— — — ' — - .

WED
22

JAN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	...

(2)

THU
23

'जीवन रेखा'

लम्बी, स्पष्ट तथा टूटी फूटी नहीं और हर प्रकार के चिन्हों से मुक्त होनी चाहिये।

FRI
24

चौड़ी और छिछली जी.रे बीमारी और ~~खराब~~ स्वास्थ्य
पतली गहरी, लम्बी जी.रे. चैतन्यता, शक्ति. अच्छा स्वास्थ्य

SAT
25

यदि जी.र, वृहस्पति के उभार की ओर ऊपर जाती हो तो सबसे ऊपर आत्मिक अधिकार!

SUN 26 शुक्र के ऊपर से शुरू हो तो अपने पर काबू, पढ़ने की खास इच्छा। उद्दण्डता को प्रकट करती है।

MON 27 (चढ़ी हुई रेखायें
(Ascending Line)
ज.रे. से कोई रेखा वृ. की ओर जाये तो तू उन्नति की इच्छा,

TUE 28 दूसरों पर अधिकार की शक्ति
यदि कोई रेखा मस्तक रेखा से रुके तो अपनी बेवकूफी से काम को असफल करेगा, यदि हृदय

WED 29 रेखा से रुके तो उसका प्रेम उसके काम को सफलता हो
यदि भाग्य रेखा से [illegible]
आ.रे उस जगह दृढ़ हो

JAN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	...

तो सफलता का चिन्ह है।

THU 30

शुक्र के अन्दर जी.रे.

शुक्र के ऊपर से मंगल के ऊपर को घेरती हुई जाती है

FRI 31 यह ज.रे. को सहारा देती है
बहुत अधिक चंचलता, बहुत काम पाई जाती हो यह सैनिकों के हाथ पर बहुत अच्छा मिलेगी

SAT यदि दूसरे में से कोई शाखा निकल कर Luna चन्द्र के ऊपर की ओर जाये तो गुस्सा या वहम / शराबी

SUN 2
भा. रे. छोटी हो और टूटी रेखा मौजूद हो तो शत्रु का खतरा है जो टल भी सकता हो।

MON 3
—— — —— ——

TUE 4

WED 5

FEB

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	...

THU 6

(३)

'भाग्य रेखा'

उद्गम स्थान :-

१. जीवन रेखा या उसके बाहर से

FRI 7

२. कलाई से सीधे शनि की अंगुली
३. चन्द्रमा के उभार से
४. हथेली के बीच से

१. का फलादेश :- सफलता अपने

SAT 8

परिश्रम का फल, शुरू के वर्ष कठिन; वातावरण अनुकूल नहीं, [illegible] लिहाज माता पिता के लिये।

SUN 9

परन्तु ज.र. स्पष्ट और मज़बूत हो तो सारी मुश्किलों को अपने गुणों से जीत लेगा।

MON 10

र. का फलादेश:- हृदय के साथ सूर्य रेखा भी हो, तो सर्वोत्तम, यश आदि

(२) का फलादेश:- भाग्य घटना पूर्ण

TUE 11

परिवर्तन शील, यदि हृदय रेखा हृदय रेखा से जुड़े तो खुशी की शादी

भाग्य रेखा स्वयं सम्पूर्ण हो

WED 12

और उस में कोई रेखा चन्द्रमा के उभार से आकर मिले तो किसी अन्य का प्रभाव सदा रहता है।

FEB

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	...

THU 13

यदि यही रेखा भाग्य रेखा को पार कर के [illegible] की ओर जाये तो वह अन्य [illegible] को अपना [illegible] सिद्ध करने के पश्चात बरबाद कर देता है! यह चिन्ह स्त्री के हाथ में अधिक है।

FRI 14

यदि भा.र. से कोई भी रेखा निकली भी उभार की ओर जाती हो तो:-

वृ. की ओर:- दूसरों पर शासन, कोई उच्च स्थान, सफलता की चमत्कार पूर्ण चिन्ह।

SAT 15

[illegible] धन, सार्वजनिक जीवन, यश आदि

SUN 16 शुद्ध की ओर! —
विज्ञान या व्यापार में
सफलता

MON 17 यदि ना. र. अपने स्वभाव —
— बिना भेद शान्ति की ओर
न जाकर, किसी और उभार
की ओर जाये तो उसके जीवन

TUE 18 के सुख कामें उस उभार
की विशेषताओं से जुड़े होंगे।

यदि ना. र. अकेली बिना शादी
के जाती हो तो वह भाग्य को

WED 19 हाथ का [illegible] होगा।
उसे किसी की सहायता नहीं
मिलेगी। यह [illegible] [illegible]
[illegible] करो।

FEB

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	...

THU 20
सूर्य रेखा का होना
आत्मविश्वास है चाहे किसी
दशा में हो।

यदि ना. र. शनि के उभार

FRI 21
को पार करके उंगली
की जड़ तक पहुंच जाये तो
यह अभाग्य चिन्ह है। हर काम
उसके control से बाहर हो जायेगा।

SAT 22
ना. र. ह. र. से मिले तो
प्रेम या मोह [illegible].

SUN 23
यदि आ. र. हृ. रे. से निकलकर
शनि के उभार की ओर
जाये वह प्रेम और मोह से

MON 24
सफल होगा, दूसरों से मेल
करने और प्रेम में सफलता
होगा, दूसरों से मदद और
लाभ उठायेगा।

TUE 25
आ. र. मस्तक रेखा से छूके
तो जीवन उसकी अपनी
मर्जी से रुकेगा।

४. का फलादेश :-

WED 26
मुश्किल का आरम्भिक
जीवन, लक्ष्य प्राप्ति के लिये झगड़ा।
परन्तु यदि रेखा साफ तथा

FEB

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	...

मजबूत है। और एक शाखा सूर्य

THU 27
रेखा की ओर जाये तो
अपने भाग्य का स्वयं निर्माता
और अपने गुणों से सफलता।
यदि आ. र., मं. र. से आरम्भ हो

FRI 28
तो हर एक वस्तु उसके
जीवन में बाद में आयेगी

आ. र. स्वयं जी. र. के अन्दर से
मंगल के उभार की ओर निकल

SAT
जाये तो आत्मिक प्रेम से
जीवन पथ पर प्रभाव पड़ेगा।
[illegible] फिर को
मिलना असम्भव हो। यदि चिन्ह
[illegible]

SUN 2
जब . आ. र. खण्डित हो
तो जीवन शून्य सी सं अपूर्ण।

MON 3
परन्तु आ. रे. का टूटना
सदा बुरा चिन्ह नहीं। यदि
बाद की रेखा सीधी और सोम्य
है तो यह सफल परिवर्तन की
सूचक भी हो सकती है?

TUE 4
प्रभाव कारी रेखा
(1) जब कोई रेखा आ. र. से मिले
या उस की सहगामिनी हो कर
चले तो उस वक्त शादी होगी

WED 5
परन्तु अगर ये नहीं मिलती
तो शादी कभी नहीं होगी।

MAR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

आयु की दोहरी रेखा दोहरी
ज़िन्दगी की निशानी है

THU 6
आ. र. धीमी हो तो आयु
में अविश्वास, आत्मविश्वास
की द्योतक

FRI 7
जब आ. र बिल्कुल न
हो। और म. र. भी साधारण हो
तो आयु निराशापूर्ण।
द्वीप

SAT 8
आरम्भ में तो पैदायशी
के बारे गुप्त, अज्ञानपूर्ण बातें:
... आ. र. को
मंगल के ऊपर से मिलाये तो
फरक का चिन्ह।

SUN
9 एक द्वीप शुक्र के केवल
(६ घेरों के बीच, हो तो
नुकसान, धन की हानि।

MON
10 मा. ६. और न.र दोनों पर
एक द्वीप अपनी मूर्खता
से नुकसान
मा.र. और हृदय. र. पर हों

TUE
11 पैर सम्बन्धी नुकसान!
द्वीप शनि के ऊपर यो. मा.र
के अन्त पर, निराशा और
गरीबी से जीवन का अन्त।

WED
12 दोनों मा.र. अचानक एक
के साथ समाप्त, कोई गरीबी
आशा। मा.र. हर लेते

MAR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

शनि के ऊपर पर भी तो

THU
13
भाग्य का अन्त बड़ा
दुखान्त! सार्वजनिक
घृणा।

FRI
14

SAT
15

SUN 16 ४ 'सूर्य रेखा'
सफलता की रेखा

MON 17 बिना स.र. के गारक
अन्धकार पूर्ण तम(चिन्ता)
युक्त, बड़ी २ शक्तियां बेकार।
फलादेश:- दूसरों पर प्रभाव, धन,
नाम, आदि पहचान

TUE 18 पुरस्कार
उद्गम स्थान:- ① जी.र, ② भा.र,
③ शुक्र के क्षेत्र,
④ चन्द्रमा के उभार, ⑤ मस्तक रेखा,

WED 19 ⑥ ह्र.र. से या अपने ही ⑦
उभार पर छोटी सी रेखा।
① अपने ... से । सफलता, भाग्य से नहीं।
②. अपने ... से ... पहचान।

MAR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

③. किसी अन्य रेखा से न जुड़ी हो

THU 20 तो मुश्किलों के पश्चात
सफलता।
④ दूसरों पर आश्रित, नाटक
खेलने वाले, कलाकार, वक्ता,
✓

FRI 21 ⑤ मानसिक कार्यों में
सफलता, वैज्ञानिक,
लेखक, Technical
✓ students
⑥. सफलता देर से। खुशी की
Late marriage,

SAT 22 सांसारिक सुख!
⑦ सफलता और खुशी
परन्तु Too late.

SUN
23
अच्छी स.र. के साथ तीसरी उंगली
पहली उंगली से लम्बी हो

MON
तो जुए का शौक।
24
तीसरी उंगली दूसरी के बराबर
हो तो सब से बड़ी इच्छा
धन जोड़ने की।

TUE
तीसरी उंगली बहुत लम्बी
25
हो तो धन का हरण करने
वाला चोर आदि
एक से ज्यादा
~~लेख~~ तीन स.र. अच्छी है

WED
different fields में
26
सफलता की द्योतक है।

MAR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31	...	...	...	...	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

शुक्र की ओर से आनेवाली
ब्रो. स.र. को काटने वाली
रेखाएं बुरी हैं।

THU
27

(3)
star सितारा स.र. पर आनन्द
शाली है
चतुर्भुज शत्रुओं से रक्षा

FRI
गुणात्मा, आनन्दी है।
28

SAT
29

SUN 30

(पू.)

हृदय रेखा

प्रेम की रेखा

MON 31

वृ. के उभार के बाहर से आरम्भ होने पर प्रेम में अन्धा उत्साह, कष्ट उठाते हैं

वृ. के उभार के बीच से आरम्भ

TUE 1

आत्मिक सम्पर्क तथा आदर्शता यह सर्वोत्कृष्ट है।

प्रथम तथा दूसरी अंगुली के बीच से शुरु, शांत एवं भावात्मक प्रकृति।

WED 2

जब शनि से आरम्भ हो तो आत्मिक स्वार्थी प्रेम प्रकृति,

यदि शनि [illegible] आत्मिक स्वार्थ।

THU 3

हृ. र. जितनी छोटी उतने ही कम प्रेम के उद्भावना।

जब बहुत लम्बी हो तो डाह तथा जलन की इच्छा।

FRI 4

हृ. र. शनि से जंजीर के समान हो तो विपरीत जाति के प्रति घृणा

हृ. र. एक ही सीधी लाइन हथेली के आर पार हो तथा

SAT 5

म. र. से मिली हुई हो तो बहुत एकाग्रता की प्रकृति जिस चीज पर ध्यान लगाते है उसे पूरा करने को जुट जाते है

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	...	...	...

APR

SUN 6
ह.र. जिह्वाकार हो, एक शाखा वृ. की ओर, तो बहुत

MON 7
प्रेम का सम्बन्ध के बहुत (बुरा) का चिन्ह है।
टूटी हुई ह.र. प्रेम सम्बन्धी उत्क्रान्त घटना की द्योतक

TUE 8

WED 9

APR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	...	...	...

THU 10
'शादी के चिन्ह'
चौथी उंगली के नीचे के उभार पर।
केवल स्पष्ट रेखायें ही शादी से सम्बन्ध रखती है

FRI 11
जब रेखा गहरी हो और
① दिल की रेखा के पास हो।
तो शादी अल्प अवस्था में।

जब शा. र. नीचे को झुके, वह अपने
② जीवन साथी के बाद मरता है।

SAT
③ जब उल्टी दिशा में (ऊपर को) हो तो वह कभी शादी नहीं करेगा।'

SUN 13

(4) जब रेखा स्पष्ट हो परन्तु उस में से छोटी २ रेखायें निकलें तो दूसरे साथी के स्वास्थ्य

MON 14

की खराबी के कारण अड़चनें।

(5) जब रेखा टेढ़ी हो तथा अन्त में कोई गुणा का चिन्ह हो या कोई रेखा काटे तो जीवन साथी की आकस्मिक घटना से मृत्यु

TUE 15

(6) जब रेखा के आरम्भ में एक द्वीप हो तो शादी बहुत दिनों तक रुक जाती है। और होने पर फिर पृथकता हो जाती है।

(7) WED 16 जब द्वीप अन्त में हो, गृहक्लेश जीवन में मुसीबत या वियोग

(8) जब रेखा जोड़दार हो ( ) तो separation, बहुत नीचे

APR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	...	...	...

जब शा. रे. स्वयं या उस की कोई

(10) शाखा सूर्य रेखा की ओर जाये

THU 17

या उस से मिले तो व्यक्ति उच्च जाति में शादी करता है।

परन्तु यदि सूर्य रेखा को काट कर

(11) नीचे की ओर झुके तो शादी से इज़्ज़त घटेगी।

FRI 18

यदि बु. के ऊपर से कोई रेखा

(12) शा. रे. में आकर मिले तो शादी में रुकावटें परन्तु शा. रे. मज़बूत हो तो दूर हो

SAT 19

जायेंगी।

(13) [illegible] के ऊपर से शा. रे. को आने वाली रेखा शादी में अड़चन, चिड़चिड़ापन —

SUN 20

(14) यदि प्रभावशाली रेखायें जहाँ वह मस्तिष्क-रेखा से मिलती हैं बहुत मजबूत हों और बु. के उभार पर शा. की. रे. को

MON 21

मौजूद हों तो शादी बहुत ताकत निश्चित होगी (मा. रे. पर मिलने का वर्ष)
यदि कोई प्रभाव वाली रेखा

TUE 22

(15) मा. रे. के पास पहुंचती है और कुछ दूर उसके समानान्तर चलती है परन्तु मिलती नहीं तो कोई बड़ी रुकावट शादी को होने से रोकेगी।

WED 23

(16) चन्द्र के उभार से कोई रेखा मा. रे. को पार कर अंगूठे की ओर जाये तो प्रेम बहुत लम्बा हो जायेगा।

APR

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	29	29	30	...	...	...

THU 24

(17) मंगल के उभार पर ज. रे. के समानान्तर, परन्तु शु. रे. या ज. की मानी रेखायें नहीं मिलनी चाहिये, वे लोग बहुत जोशीले तथा तरंगित होंगे। यदि ऐसी कई

FRI 25

हों तो एक समय में कई प्रेम

SAT 26

SUN
27

बच्चों की (संतान) की रे.

MON
28

शादी की रेखा के ऊपर
खड़ी होती हैं
चौड़ी गहरी = लड़के
पतली सुन्दर = लड़कियां
यदि पर्वत का उभार बहुत

TUE
29

चपटा या ऊंचा हो तो कोई
संतान नहीं होगी, यदि प्रथम
मणिबन्ध अन्दर को झुका हुआ
धनुषाकार हो तो यह बात और

WED
30

भी निश्चित होगी

MAY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

"स्वास्थ्य रेखा"

THU
1

यह बुद्ध के उभार के नीचे से
निकल कर सीधी हथेली को
नीचे जा कर ज.र. को मिलती
है तो उसे वह बीमारी

FRI

बतलाती है, यह मृत्यु का
स्थान भी हो सकता है।

यह रेखा बहुत परिवर्तन शील है
इस का न होना ज़्यादा अच्छा

SAT
3

है!

यदि ह्र.र. से निकले और
स्वा.र. जी.र. से मिले तो
दिल की बीमारी का चिन्ह।

SUN सब से अन्त में तो यह है 4 कि हथेली के नीचे हो और ज. र. को न छुवे

MON
5
नाखून छोटे अन्दर को मिला, गोल हों, स्वा. र. गहरी तो दिल की दुर्बलता हो जायेगी।

TUE
नाखून लम्बे, बादाम की शकल के फेफड़ा की कमजोरी। परन्तु चौड़ स्वा.रे पर उ. हो तो T.B.

WED नाखून चपटे, गोले की शकल के, स्वा. र. गहरी तो फालिज, दिल की भी कमजोरी।

MAY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

"मंगल का पटका"

THU
8
टूटा हुआ या न टूटा हुआ अर्धवृत जो पहली उंगली के नीचे से शुरू होकर चौथी उंगली तक जाता है।

F. R.
ऐसे लोग इन्द्रिय सुखों की अपेक्षा मानसिक अधिक चाहते। शादी की रेखा से गुज़रे तो शादी बहुत बुरा अनुभव लिए होगी।

SAT
10

SUN
11
शनि की अंगूठी ∪
बहुत कम पाई जाती है

MON
12
शनि के ऊपर को चारों ओर अर्धवृत्ताकार
असफल, अन्धकार पूर्ण, चिन्ताशील, बहुत कम शादी करते हैं, यदि करते

TUE
13
हैं तो असफल।
दुर्बल - निर्धन तथा दुखान्त

WED
14

MAY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

'मणि बन्ध'
ये तीन होते हैं परन्तु

THU
15
तीनों एक साथ कम ही मिलते हैं।
कलाई के पास वाला = I
(स्वास्थ्य तथा शक्ति).

FRI
16
यदि यह चन्द्राकार होगा तो बच्चों के रुकावट

SAT
17

SUN 18

'अनुभव रेखा'

अर्धवृत्ताकार बुद्ध के ऊपर से

MON 19

चन्द्र के ऊपर से, यो सिर्फ चन्द्र के ऊपर पर ही पाई जाती है।

भावुक, दार्शनिकता, उत्साह और स्वप्न, ध्यानमग्न

TUE 20

विचित्र शक्तियां, आश्रित भी हो तो भी समस्याओं को सुलझा लेंगे। ~~यो च.क्ष.~~

WED 21

MAY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

'निधन रेखा'

THU 22

अर्धवृत्ताकार, चन्द्र के ऊपर को मंगल के ऊपर से मिलाती है। यो च.क्ष. से कलाई को और निकल जाता है।

FRI 23

पहले प्रकार की शक्ल के लगाव की इच्छायें, जब ज.र. से कट जाती है तो मृत्यु

दूसरी शक्ल, नाखून, इच्छायें, कल्पनायें,

SAT 24

SUN
25 'आकस्मिक घटनायें'.

MON
26 शनि के ऊपर से आकर
जी.रे. को छूने वाली रेखायें,
जब म.रे. पर पड़े तो मस्तक
को खतरा

TUE
27

WED
28

MAY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	...	...	1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

तारा, गुणा, चतुर्भुज
द्वीप, वृत्त, बिन्दु, खिचड़ी (Grille)

THU
29

'द्वीप'
जी.रे. पर. बीमारी
म.रे. दिमाग की कमज़ोरी
हृदय.रे. हृ.की दुर्बलता

FRI
30

भा.रे. सांसारिक कार्यों में हानि
चिन्ता
सू.रे. नुकसान, सार्वजनिक
घृणा

SAT
31

स्वा.रे. स्वा.त बीमारी

SUN 1 खिचड़ी = Grille.
जिस प्रकार पर पाया जावेगा॥

MON 2 उस की विशेषताओं को कम कर देगा।

—— —— —— ——

तारा star
केवल [illegible] स्थान के अतिरिक्त

TUE 3 शेष सब जगह भाग्यशाली
बृ०. पर :- शान्ति, मर्यादा, उन्नति
सूर्य पर :- धन, यश, ख्याति
WED 4 आर्थिक जीवन
बुध पर :- व्यापार, विज्ञान, परिज्ञान

JUN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

THU 5 शुक्र (जो बृ. के नीचे है) पर
बुद्धि में [illegible]
[illegible]

चन्द्रमा पर :- नये विचार, आविष्कार

FRI 6 शुक्र (जो बुध के नीचे) इज्जत
मर्यादा
शनि के ऊपर :- [illegible] पूर्ण
कामों में सफलता
SAT 7 शनि पर :- आध्यात्म शक्ति
आत्म का विकास।
उत्तम पूर्ण [illegible], प्रसिद्ध

SUN 8 (गुणक Cross

केवल एक काम दायक स्थान

MON 9 अर्थात बृहस्पति उ०
भाग्यशाली प्रेम करने होना।
शनि के ऊपर पर अचानक
मृत्यु

TUE 10 बु०- - - - - बेईमानी
शुक्र (जो बुद्ध के नीचे) प्रतिकूलता
शुक्र (जो वृ. " ") झगड़ा, मृत्यु

WED 11 चन्द्रमा - - - घातक धक्का
खुद को होना।

डूबने से मृत्यु

JUN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

THU 12
काल के ऊपर पर:- प्रेम घातक
ज्ञान
म. रे. पर:- दिमागी चोट
ह. रे. :- प्रियजनों की मृत्यु

FRI 13

SAT 14

SUN 15 "चतुर्भुज"

रेखाओं का चिन्ह

MON 16

जी.हृ. पर :- मृत्यु से रक्षा

आ.र. :- हानि से रक्षा

इसी प्रकार अन्य रेखाओं पर_

TUE 17 — — — —

सहायक रेखायें शुभ.

विरुद्ध रेखा की उन्नति को रोकते हैं।

WED 18

यदि रेखा किसी रेखा पर समाप्त हो तो खराब [illegible]

JUN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

मोटी रेखायें ; अन्य रेखाओं के गुणों को बढ़ा देंगी

THU 19

Ascending रेखायें शुभ.

Descending रेखायें अशुभ.

कोई रेखा बायें में हो और दायें में न हो तो कोई फल नहीं.

FRI 20

बड़ा त्रिकोण।

जी.र + म.र + स्वा रे.।

SAT 21

चतुष्कोण।

मस्तिष्क तथा हृ.र. के बीच यदि चौड़ा हो तो स्वाभाविक उदारता।

SUN 22 अधिक चौड़ा हो तो निर्णय की कमी

MON 23 उंगलियां

पहली उंगली लम्बी हो तो प्रेम, दूसरों पर अधिकार, छोटी हो तो उत्तरदायित्व की कमी,

TUE 24

दूसरी उंगली लम्बी हो तो एकान्त प्रियता, विचारशीलता, बुद्धिमत्ता। छोटी हो तो

WED 25 गम्भीरता की कमी, जल्द बाज़ी

JUN

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

THU 26

तीसरी उंगली लम्बी हो तो श्रेष्ठता, यश, बहुत लम्बी हो, बदनामी से परे धन, गुण से प्रेम

छोटी हो तो किसी वस्तुओं के प्रति अनिच्छा

FRI 27

चौथी उंगली लम्बी हो तो मानसिक शक्ति का अभाव और शान्ति, वाक्पटुता

SAT 28

छोटी हो विचारों को प्रकट करने में कठिनता।

SUN
29 अंगूठे और पहली उंगली के बीच की जगह सूजी हो तो, खिन्नता.

MON
30 पहली और दूसरी के बीच जगह चौड़ी हो तो विचारों की स्वतंत्रता
तीसरी और चौथी के बीच

TUE
1 कार्य की स्वतंत्रता
उंगलियां पीछे को झुकें तो विचार ग्राह्यता, अन्दर को झुकें तो, सुस्त, चिन्ताशील

WED
2

JUL

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31	—	—

नाखून Nails

THU
3 बहुत लम्बे :- शरीर की जीवन [illegible] दूर रही.
फेफड़े और छाती की बीमारी की

FRI
4 छोटे नाखून दिल की कमज़ोरी, विशेष कर जब अर्ध-चन्द्रमा भी छोटे हों. [illegible] के कारण के गये दिखाई दें तो हृदय की कमज़ोरी

SAT
5 [illegible] पतले [illegible] की कमज़ोरी

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
...	...	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31	...	...

JUL

SUN 6

चपटें हों आर्टिस्ट की
और ले मांस मे रंग
उभरे हुये प्रतीत हों।

MON 7

तो कालिज -

उभार :-
मंगल :- प्रेम, आलिङ्गन सेवा, लालसा।

TUE 8

शुक्र :- साहस, चैतन्यता, लड़ाई
बुध :- मानसिकता व्यापार
विस्तार

WED 9

चन्द्र :- विचार, नवीनता
परिवर्तन

THU 10

सूर्य :- चमत्कृतता, सफलता, फैल
गुरु :- इच्छा। शक्ति, राजस्व

FRI 11

शनि :- रोना धोना, चिन्ता
गम्भीरता

SAT 12

हस्तरेखा, संकेत

ॐ

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

(२० करोड जपयज्ञ)

आध्यात्मिक संक्रमण –

अक्कलकोटनिवासी परमसद्गुरू **श्रीगजाननमहाराजकी** प्रेरणासे लोक-कल्याण हेतू प्रारंभ किये गये उपरिनिर्दिष्ट 'कलिकल्मषनाशन षोडशनाम' मंत्रके जपयज्ञकी १७ करोड जपसंख्या सामुदायिकरीतीसे पूर्ण हुई है। पुनश्च मंगलवार दिनांक १४ जनवरी १९६९ मकरसंक्रमणसे इसी मंत्रका जपारंभ करके प्रति समय २० करोड संख्या सामुदायिकरीतीसे पूर्ण की जावें इस प्रकारका मानस श्रीजीनें व्यक्त किया है।

सर्व आबालवृद्ध, स्त्री-पुरुषोंको इस निवेदन व्दारा आवाहन किया जाता है की, यह सुवार्ता जानतेही आप स्वयं जपानुष्ठानको प्रारंभ करें एवं आपके संबंधित व्यक्तियोंकोभी इस कार्यके लिये प्रवृत्त करें।

इस अनुष्ठानके लिये स्थल, काल, संख्या विधि या स्त्री-पुरुष इसप्रकारका कोईभी बंधन नहीं। आपके गटसे होनेवाली जपसंख्या प्रतिमास कमसे कम एकबार निम्न लिखित पतेपर आपके नाम तथा पूर्ण पतेसाथ सूचित करें। जप-संख्या के साथ उससे संबंधित व्यक्तियोंकी संख्या और यदि संभव हो तो उनके नाम तथा पताभी सूचित करें।

जपका प्रारंभ करनेसे पहिले निम्न लिखित श्लोकका पठण यदि किया जावे तो अधिक फलदायी होगा ऐसा कहा गया है।

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम।

"इस जपसत्रमें किसीभी समय सहभागी होकर होसके उतना जप करने-वाले प्रत्येक व्यक्तिको इस जपानुष्ठानके संपूर्ण पुरश्चरणका फल मिलेगा" श्रीजीका यह आशीर्वाद है। हम सबके लिए यह परमभाग्यकी बात है।

अधिक जानकारी के लिए निम्न लिखित पतेपर लिखें या स्वयं मिले।

बा. ग. वडनेरे,
कार्यवाह, **जपयज्ञ समिति,**
३७६, शुक्रवार पेठ, **पूना २,** (महाराष्ट्र).

पूर्ण २

॥ श्री ॥

विद्वद्वरकल श्रीराधाकृष्ण धार्मिक संस्थान

(संस्थापक–अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज)

ए–१, दिल्ली उच्च न्यायालय, नई दिल्ली ।

ब्रह्मीभूत अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज का ब्रह्मनिवार्णोत्सव एवं संस्थान का तृतीय वार्षिकोत्सव



स्थान :–धर्मसंघ महाविद्यालय, २१७२, यमुना बाजार, दिल्ली–११०००६.

समय :–कार्तिक शुक्ल ६, वि० स० २०४२, नवम्बर २०, १९८५, दिन बुधवार ।

अध्यक्षता :–अनन्त श्री स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज (लुधियाना) ।

उपाध्यक्ष :–अ० भा० धर्म संघ ।

सानिध्य :–आचार्य श्री श्याम लाल शर्मा, प्रधानाचार्य ।

इस अवसर पर ब्रह्मसत्र, आराधना, विद्वान सम्मान, प्रवचन, ब्रह्मभोज आदि का आयोजन किया गया है जिस में आप सभी प्रभुप्रेमी सादर आमंत्रित हैं ।

कार्यक्रम :-

ब्रह्मसत्र –उपनिषद् ब्रह्मसूत्र, गीता, विष्णु सहस्रनाम का पाठ तपस्वी ब्राह्मणों के द्वारा, प्रातः ८ से १० बजे तक ।

वार्षिकोत्सब में सम्माननीय विद्वान :–पं० श्री लक्ष्मी शङ्कर जी वैद्य, आयुर्वेदाचार्य ।

प्रवचन :–(१) अद्वैत वेदान्त–पं० डा० बलजिन्नाथ जी (जम्मू)
(२) भगवद्भक्तिरसामृत–डा० रघुनाथ शर्मा (दिल्ली)
(३) श्रद्धाञ्जलियाँ
(४) वार्षिक विवरण महामंत्री द्वारा ।

समय :– प्रातः १० से १२.३० बजे तक ।

ब्रह्मभोज :–दण्डी सन्यासी, ब्रह्मण एवं भक्तगण १२.३० बजे से । संस्थान श्री जी महाराज के दुर्लभचित्रों एवं लेखों को छायाचित्र के माध्यम से सुरक्षित रखना चाहता है । जिन महानुभावों के पास महारज श्री के दुर्लभ चित्र, लेख आदि हों वह उन्हें साथ ले आवें । यह सामग्री यथाशीघ्र लौटा दी जावेगी । कार्यक्रम में भाग लेकर पुण्य लाभ करें ।

निवेदक :-

पं० देशराज जी शर्मा (अध्यक्ष)

श्री राजकुमार जी अग्रवाल (महामंत्री)

श्री रत्न लाल जी अग्रवाल जैन (कोषाध्यक्ष एवं प्रचार मंत्री)

॥ श्री: ॥

विद्वद्‌रकल श्री राधा कृष्ण धार्मिक संस्थान, दिल्ली (रजि॰न॰एस॰-16820/86)
(संस्थापक)
अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज
डाक का पता : स्टाफ क्वार्टर ए-1, दिल्ली हाई कोर्ट, शेरशाह रोड, नई दिल्ली ।

दिनांक: 27·10·86

प्रतियोगिता

धर्मसंघ महाविद्यालय, यमुनाबाज़ार, दिल्ली के छात्रगण को सूचित किया जाता है कि संस्था के संस्थापक अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज के चतुर्थ ब्रह्मनिर्वाणोत्सव एवं संस्था के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में एक लिखित निबन्ध प्रतियोगिता एवं आशु-भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है जिस का विवरण इस प्रकार है :-

विषय: अनन्त "श्री जी" द्वारा विरचित राष्ट्रभावना से ओत-प्रोत ग्रन्थ "श्री" राष्ट्रालोक" से लिया जायेगा ।

(क) लिखित निबन्ध :-

स्थान, समय, दिन. धर्मसंघ महाविद्यालय 2182 यमुनाबाज़ार दिल्ली । 8·11·86 (शनिवार) प्रात: 10 बजे

(ख). आशुभाषण प्रतियोगिता : 9·11·86 (रविवार) धर्म·सं·महा·वि·य·बा·दि·

नियम

1· लिखित निबन्ध के लिये उपरोक्त ग्रन्थ की एक प्रति प्रत्येक प्रतियोगी को दस दिन पूर्व दे दी जायेगी ताकि वे इस का समुचित अध्ययन कर सकें । (इसके लिये कृपया पू॰आचार्य श्यामलाल जी से सम्पर्क करें ।)

2· लिखित निबन्ध का शीर्षक जो कि उक्त ग्रन्थ में प्रतिपादित विषय-वस्तु से सम्बन्धित होगा प्रतियोगियों को प्रतियोगिता के समय ही बताया जायेगा ।

3· निबन्ध लगभग एक हज़ार शब्द परिमाण का होगा जिस के लिये दो [illegible] का समय निर्धारित है। लेखन सामग्री की व्यवस्था प्रतियोगी -विद्या[illegible] को करनी होगी ।

4· निबन्ध संस्कृत अथवा हिन्दी अथवा संस्कृत/हिन्दी मिश्रित भाषा में लिख[illegible] जा सकता है ।

5· लिखित निबन्ध प्रतियोगिता में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने पर ही आशु भाषण प्रतियोगिता में सम्मिलित होने का अधिकार होगा ।

6· आशुभाषण प्रतियोगिता का शीर्षक (श्री राष्ट्रालोक से) प्रतियोगिता के समय ही सूचित किया जायेगा ।

7· दोनों प्रकार की प्रतियोगिता में अभ्यार्थियों की योग्यता का मूल्यांकन कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत विद्वद्‌मण्डल द्वारा किया जायेगा । जिस का निर्णय अन्तिम एवं सर्वोपरि होगा ।

श्री डा॰ रघुनाथशर्मा एम॰ए॰पी॰एच॰डी
(उपाध्यक्ष)

श्री राजकुमार अग्रवाल (महामंत्री) श्री रत्नलाल अग्रवाल (प्रचारमन्त्री)

(कृ·प· 31)

पुरस्कार

प्रथम: रू॰250 नकद एवं 120/- रू॰ मूल्य के परिधान
द्वितीय: रू॰200 नकद एवं 120/-य॰ मूल्य के परिधान
तृतीय: रू॰150 नकद एवं 120/- रू॰ मूल्य के परिधान